धर्मों का इन्द्रधनुष

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास

Scanned with CamScanner

धर्मों का इन्द्रधनुष
DHARMON KA INDRADHANUSH

संस्करण प्रथम : 2019

© इस पुस्तक के सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।

पुस्तकप्राप्ति स्थल :

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास
9, अथर्व विहार, इन्दौर रोड,
उज्जैन- 456010 (म.प्र.)
सेलफ़ोन - 08109516550, 6265815314
E-mail- suryaprvyas@gmail.com

मूल्य : ट्रस्ट के प्रति सद्भाव

टाइपसेटिंग - कम्पोज़िंग :
कु. दीपाली सोलंकी

मुद्रक
श्री तिरुपति प्रिन्टर्स
फ्रीगंज, उज्जैन - 456010 (म.प्र)
मो. - 091319-02150
E-mail- tirupatiprinters2018@gmail.com

Scanned with CamScanner

(आ) अनेकान्त : सामाजिक सन्दर्भ में — डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

6. **बौद्ध धर्म**
   (अ) धम्मपद : मानव धर्म के अनुरक्षण का दस्तावेज — श्री तारागम — 423
   (आ) धम्मपद और गीता — डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास

7. **यहूदी, पारसी और बहाई धर्म** — डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास — 438

8. **विविध**
   (अ) कालिदास-प्रणीत रघुवंश में धर्म — डॉ. वत्सला — 448
   (आ) वर्तमान सामाजिक सन्दर्भ में धर्म — श्री शशिमोहन श्रीवास्तव
   (इ) गीत - संसार से भागे फिरते हो..... — साहिर
   (ई) कविता - गीता में धर्म — कवि श्री आनन्द
   (उ) गीत - ओ बटोही — श्री ब्रजेशचन्द्र श्रीवास्तव

तृतीय भाग : परिचयादि — 465
(अ) योगदानकर्ताओं का सचित्र परिचय
(आ) व्याख्यानमाला के सहभागियों के दूरभाष नम्बर

चतुर्थ भाग : चित्रावली — 497

❖ ❖ ❖

Scanned with CamScanner

रहे और जन-जन की मुक्ति के लिए निमित्त बनते रहे। उन्होंने यह न किया होता तो उनकी निमित्त की भूमिका कमज़ोर रह गई होती और जिसकी दोनों ही भूमिकाएँ सम्यग्रूप से सफल सार्थक नहीं होतीं, वह मुक्त नहीं हो पाता। **महावीर** इन दोनों भूमिकाओं का असाधारणरूप से वन्दनीय निर्वाह करने के कारण ही भगवान् हैं। आज 2600 से अधिक साल बाद भी मनुष्य जाति का सिर उनके प्रति पूजाभाव से झुका हुआ है।

महावीर ने सोचा भी नहीं होगा कि उनका जन्म राज्य बिहार (जो उनके विहार करते रहने के कारण ही बिहार कहलाता है,) और समूचा देश कुछेक छोटे-छोटे से अन्तरालों, जैसे **तिलक** और **महात्मा गांधी** के समय को छोड़कर शेष सारे समय कर्म को ठुकराकर भाग्यवाद के हवाले हो जाएगा। वह दलाली और सट्टेबाजी की गिरफ़्त में होगा। हॉटसीट पर बैठकर पलक झपकते करोड़पति बनना चाहेगा। चाहेगा कि छप्पर फटे और उसके घर में धन की मूसलाधार वर्षा हो जाए। जिनके हाथों में निमित्त की भूमिका है वे ऐसा माहौल बनाने में सफल होते जाएँगे कि आम आदमी ख़ुद को अपनी उपादान शक्ति से भी रिक्त अनुभव करने लगेगा। क्या उनके विचारों और आचरण की ओर लौटने का हम प्रण करेंगे? अभी-भी देर नहीं हुई है। ग़लत दिशा में हज़ार मील तक चले आने के बाद भी सही दिशा पकड़ने के लिए हमें फिर हज़ार दो हज़ार मील नहीं चलना होगा, सिर्फ पलटना भर होगा। हम पलटे नहीं कि सही दिशा में होंगे।

(आ) अनेकान्त : सामाजिक सन्दर्भ में

डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

जैन धर्म और दर्शन ने विश्व को अनुपम और अद्वितीय सिद्धान्त दिए हैं। ये सिद्धान्त इतने शाश्वत, कालजयी, बुनियादी, जीवन्त और युगीन हैं कि विश्व के लिए इनकी उपयोगिता सदैव बनी रहती है। जैन दर्शन के इन्हीं शाश्वत सिद्धान्तों में से एक महान् और व्यावहारिक सिद्धान्त अनेकान्तवाद है। जैन धर्म का यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिससे विश्व के सभी विवाद सुलझ सकते हैं। इस सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए केवल समाज ही नहीं समग्र विश्व में सुख, शान्ति और समृद्धि का साम्राज्य सर्वत्र छा सकता है।

सन्मतितर्क के कर्ता **हरिभद्रसूरि** ने कहा है -

Scanned with CamScanner